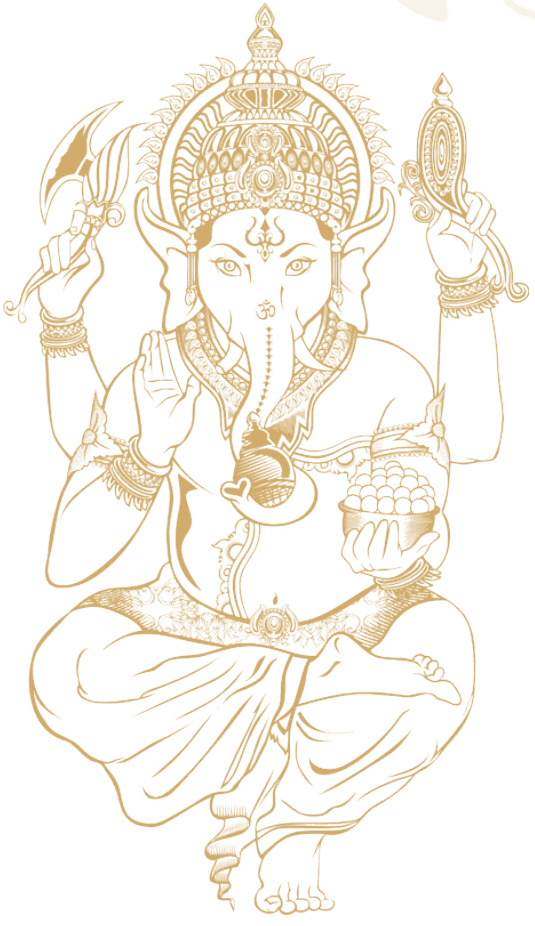

Mr.yash Gupta

Vaishali

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119880402

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/07/1998	जन्म तिथि	25/10/2025
मंगलवार	दिन	शनिवार
घंटे 15:40:47	जन्म समय	12:16:47 घंटे
घटी 25:16:21	जन्म समय(घटी)	14:27:14 घटी
India	देश	India
Alwar	स्थान	Alwar
27:32:00 उत्तर	अक्षांश	27:32:00 उत्तर
76:35:00 पूर्व	रेखांश	76:35:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:40	स्थानिक संस्कार	-00:23:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:34:14	सूर्योदय	06:29:53
19:22:33	सूर्यास्त	17:45:24
23:50:03	चित्रपक्षीय अयनांश	24:13:06

विंशोत्तरी
बुध 7वर्ष 3मा 17दि

शुक्र	
24/10/2012	
24/10/2032	
शुक्र	23/02/2016
सूर्य	23/02/2017
चन्द्र	24/10/2018
मंगल	25/12/2019
राहु	24/12/2022
गुरु	24/08/2025
शनि	24/10/2028
बुध	25/08/2031
केतु	24/10/2032

ग्रह	राशि	अंश
लग्न	वृश्चि	02:24:42
सूर्य	मिथु	21:16:19
चंद्र	वृश्चि	24:16:31
मंगल	मिथु	06:52:31
बुध	कर्क	15:49:10
गुरु	मीन	04:02:29
शुक्र	वृष	21:31:21
शनि व	मेष	08:29:09
राहु व	सिंह	08:39:04
केतु व	कुंभ	08:39:04
हर्ष व	मक	07:22:30
नेप व	मक	07:22:30
प्लूटो	वृश्चि	11:52:14

ग्रह	राशि	अंश
लग्न	धनु	24:10:49
सूर्य	तुला	07:53:46
चंद्र	वृश्चि	18:51:06
मंगल	तुला	28:29:05
बुध	वृश्चि	01:10:37
गुरु	कर्क	00:26:27
शुक्र	कन्या	19:57:32
शनि व	मीन	01:54:52
राहु व	कुंभ	23:05:20
केतु व	सिंह	23:05:20
हर्ष व	वृष	06:18:21
नेप व	मीन	05:42:57
प्लूटो	मक	07:10:41

विंशोत्तरी
बुध 14वर्ष 2मा 17दि

बुध	
25/10/2025	
12/01/2040	
	25/10/2025
केतु	06/06/2026
शुक्र	06/04/2029
सूर्य	11/02/2030
चन्द्र	13/07/2031
मंगल	09/07/2032
राहु	27/01/2035
गुरु	04/05/2037
शनि	12/01/2040

लग्न-चलित

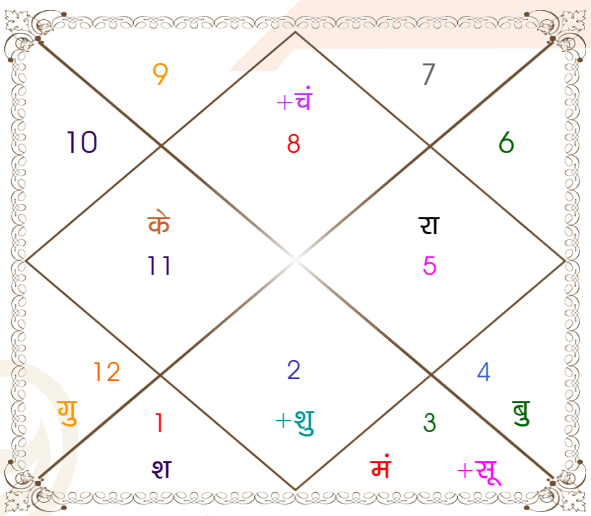

लग्न-चलित

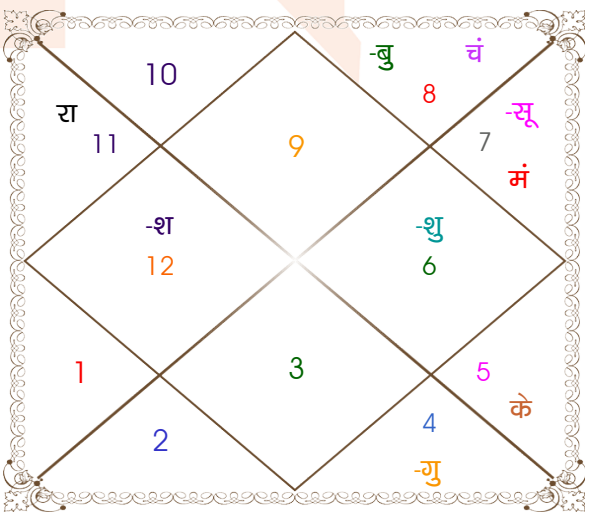

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	कीटक	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मृग	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

डतण्लेी ळनचजं का वर्ग मृग है तथा टंर्पोंसप का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्लेी ळनचजं और टंर्पोंसप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्लेी ळनचजं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

टंर्पोंसप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु टंर्पोंसप कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्लेी ळनचजं तथा टंर्पोंसप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।